उपसंहार

उपसंहार

आधुनिकता आधुनिक प्रक्रिया की गतिशीलता का प्रतिफलित तत्व है। मध्यकाल से भिन्न या नवीन इहलौकिक दृष्टिकोण की सूचना देनेवाली सारी गतिविधियाँ आधुनिक कही जाती है। इस प्रकार आधुनिक युग की आधुनिक स्थितियों व परिस्थितियों के बीच जीते मनुष्य में जो नई दृष्टि उभरती है उसे आधुनिकता बोध के तहत हम देखते हैं। आधुनिकता बोध विभिन्न प्रभावों से उत्पन्न एक नवीन चेतना है, जो एक सतत विकासमान आवधारणा है। अतः आधुनिकता बोध वह चिन्तन विधि, नवीन मानवीयता एवं यथार्थ वादी दृष्टि है जो युग की वास्तविकता को दायित्वपूर्ण स्वीकृति प्रदान करता है।

हिन्दी साहित्य में आधुनिकता बोध की प्रवृत्तियाँ 1950-60 के दशक में परिलक्षित होती है। स्वतंत्रता के उपरांत प्रत्येक क्षेत्र में पुनर्मूल्यांकन, परिष्कार और आधुनिकीकरण का विकास साहित्य की विभिन्न विधाओं में दृष्टिगोचर होता है। आधुनिकता बोध के जन्म के साथ-साथ सभ्यता, संबंधों, मूल्यों, विश्वासों, मान्यताओं और विचार दृष्टि में तीव्र गति से परिवर्तन आने लगा तथा नए-नए चिंतनात्मक आंदोलनों के प्रभाव स्वरूप कथा-कहानियों में आधुनिकता का आभास होने लगा।

नई कहानी का लक्ष्य नये भावबोध या आधुनिकता बोध के कारण उत्पन्न सामाजिक विसंगतियों एवं विकृतियों का यथार्थ परिचय देना है। इस

प्रकार नयी कहानी में व्यक्तिवाद, यथार्थवाद, अनुभूतिवाद एवं आधुनिकतावाद की प्रतिष्ठा हुई जिसके फलस्वरूप वह जीवन, समाज और राष्ट्र व्यापक परिवेश से कटकर कहानीकारों के वैयक्तिक जीवन की निजी सीमाओं से आबद्ध हो गयी। इसलिए नई कहानी में व्यक्तिनिष्ठ अहं, काम-चेतना, यौनाचार, नारी-पुरुष संबंधों का चित्रण प्रमुख रूप से हुआ है।

हिन्दी साहित्य में नई कहानी आंदोलन के सशक्त हस्ताक्षर निर्मल वर्मा का कथा-साहित्य में आधुनिकता का बोध लानेवाले कहानीकारों में शिखर स्थान है। हिन्दी साहित्य क्षेत्र में निर्मल वर्मा अपने समय की अलग अस्मिता रखने वाले कथकार हैं। निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में मानव मन की जटिलताओं, परिवर्तित मूल्यों से उत्पन्न संधर्ष, समाज की जटिलताओं और मानवी रिश्तों की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। व्यक्ति और समाज के बीच के द्वंद्व और अंतराल के प्रश्नों को उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों में उठाया है।

निर्मल वर्मा ने आधुनिक यांत्रिक जीवन से उत्पन्न पारिवारिक-सामाजिक विषमताओं और विसंगतियों को अपने उपन्यासों और कहानियों में प्रायः अलग-अलग कोण से उठाया है। उनके कथा साहित्य में आधुनिक जीवन की व्यापक अनुभूतियाँ अभिव्यक्त हुई हैं। आज के बदलते समाज में मानवीय संबंधों की जटिलता, पारिवारिक संबंधों का टूटन, जीवन में व्यर्थता बोध, समाज के बीच रहकर भी अपने को अलग और एकाकी अनुभव करना, असुरक्षा और अलगाव जैसी समस्याएँ निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में प्रतिबिम्बित होती हैं।

निर्मल वर्मा की रचनाओं में औद्योगीकरण, महानगरीय सभ्यता, युद्ध, बदलते हुए मानसिक परिवेश और भ्रष्ट व्यवस्था के कारण उत्पन्न अलगाव बोध, अजनबीपन, आत्मपरायेपन का भावबोध, ऊब, संत्रास, आत्ममुग्धता, स्मृति, आत्मान्वेषण के क्षण और अंश के बोध तलाशे जा सकते है। उनके अनुसार अलगाव, अधूरापन, निर्वासन आदि समस्याएँ मनुष्य के अस्तित्व के साथ पैदा हुई हैं जो मनुष्य को यांत्रिक, अजनबी, मिसफिट, अकेला या विद्रोही बना देती है। इसलिए निर्मल वर्मा ऐसी समस्याओं के संदर्भ में ही कला की प्रासंगिकता खोजते हैं।

निर्मल वर्मा आधुनिक गद्य साहित्य को नई दिशा देनेवाले प्रतिभा संपन्न साहित्यकार के रूप में विख्यात हैं। इन्होंने हिन्दी गद्य साहित्य को आधुनिक परिवेश के अनुरूप समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। निर्मल वर्मा की अनेक रचनाएँ व्यक्ति की अस्मिता का संवेदनात्मक परीक्षण करती हैं। स्वातंत्र्योत्तर भारत के आधुनिक मनुष्य की निराशाओं और आकांक्षाओं के जीवंत चित्रण करने का सफल प्रयास निर्मल वर्मा के साहित्य में द्रष्टव्य है। उनका कथा साहित्य अपने युग के समाज का आईना है और उनके द्वारा चित्रित समाज का स्वरुप आधुनिक मध्यवर्ग का है।

निर्मल वर्मा के संपूर्ण साहित्य में आधुनिकता का व्यावहारिक पक्ष उजागर होता है। आधुनिक परिवेश में जीते मनुष्य की मनःस्थितियों और समस्याओं को उन्होंने कलात्मक स्तर पर अभिव्यक्त किया। आधुनिक महानगरीय जीवन में बढ़ता अकेलापन, परायापन और अजनबीपन, व्यर्थता बोध, स्त्री-पुरुष

प्रेम संबंध, प्रेम का नया दृष्टिकोण, स्वार्थ मानसिकता पर टिके रिश्तों, बेरोज़गारी, आदर्श और नैतिकता की बातों के पीछे का खोखलापन, यौन कुंठा, मृत्युबोध और ऐसी ही कई अन्य बातों को निर्मल वर्मा ने अपनी कहानियों और उपन्यासों का विषय बनाया जो आधुनिकता बोध के मुख्य मुद्दे हैं।

अकेलापन निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य का केन्द्रीय विषय रहा है। निर्मल वर्मा की दृष्टि आधुनिक संदर्भों में निरन्तर अकेले होते जा रहे व्यक्ति के अन्तर्मन की अनुभूतियों की ओर मुड़ी है । उन्होंने आज के जीवन की रिक्तता, आधुनिक टेंशन, अजनबीपन, विघटित होते हुए परिवार, निरपेक्ष सामाजिक जागरूकता, जीवन की अनिश्चितता, बेगानापन आदि आधुनिक अनुभवों का चित्रण कलागत संयम के साथ किया है।

अकेलेपन का बोध आधुनिक मानसिकता का अपरिहार्य अंग है। 'परिंदे', 'धूप का एक टुकड़ा', 'अमालिया', 'पिछली गर्मियों में', 'माया दर्पण', 'कव्वे और कालापानी', 'जलती झाड़ी', 'सूखा', 'अंतराल', 'दूसरी दुनिया', 'डेढ़ इंच ऊपर' आदि कहानियों द्वारा निर्मल वर्मा ने अकेलेपन व अजनबीपन को उभारने का प्रयास किया है। 'परिंदे', और 'माया दर्पण' जैसी कहानियों में अकेलेपन का स्वीकार भाव नज़र आता है।

'बुखार' कहानी का पात्र प्रेमी के दूर जाने के बाद अकेलेपन को महसूस करता है और उसे स्वीकारते हुए नज़र आता है। 'कव्वे और कालापानी' के बड़े भाई ने अकेलापन का कालापानी खुद चुना और एकाकी जीवन में भी

उन्हें अपने घर से दूर होने का अहसास नहीं था। 'सूखा' में निर्मल वर्मा ने स्थापित कर दिया कि बाहर के सूखे से बड़ा होता है अंदर का सूखा।

निर्मल वर्मा के उपन्यास 'वे दिन' में द्वितीय विश्वयुद्ध, अकेलेपन, आत्मनिर्वासन, अलगाव और अधूरेपन का दर्द युद्धोत्तर परिस्थिति के संदर्भ से उपजा है। इसमें आधुनिकतावादी अजनबीपन को एक विदेशी परिवेश में प्रस्तुत किया गया है। अकेलेपन की पीड़ा के अहसास ने मानवीय नियति पर घिराव डाला हैं। इसका चित्रण 'एक चिथड़ा सुख' और 'लाल टीन की छत' उपन्यासों में देखने को मिलता है।

'लाल टीन की छत' की 'काया' का अकेलापन अपने परिवेश में व्याप्त सन्नाटे और मौन से उत्पन्न अकेलेपन है। 'एक चिथड़ा सुख' की बिट्टी अपने अकेलेपन में काफ़ी संतुष्ट दिखाई देती हैं। निर्मल वर्मा ने 'अंतिम अरण्य' उपन्यास में आज के युग में बूढ़े लोगों का अजनबीपन और अकेलेपन का ज़िक्र किया है।

आज़ादी के बाद की कहानी व्यक्ति और समाज, व्यक्ति और परिवेश, व्यक्ति और मूल्यों की टकराहट को रूपायित करती है। जीवन की परिस्थितियों में परिवर्तन होने के साथ-साथ मूल्यों में भी परिवर्तन होता चला है। 'आदमी और लड़की' कहानी की लड़की एक वयस्क विवाहित पुरूष के साथ संबंध रखना गलत नहीं समझती। पति-पत्नी के रिश्ते में व्यापक परिवर्तन दृष्टिगत होने लगा।

आधुनिक समाज में प्रेम का परंपरागत स्वरूप क्षीण हो गया। आधुनिक व्यावसायिकता के कारण पारिवारिक संबंधों की भावात्मकता और आत्मीयता नष्ट हो गयी। 'परिंदे', 'माया दर्पण','एक दिन का मेहमान', 'बीच बहस में', 'अंधेरे में' आदि कहानियों में इसका उदाहरण देखने को मिलता है। 'एक दिन का मेहमान' कहानी मम्मी और मेहमान पापा के बीच के आंतरिक तनाव को गहराती है, जो उनकी बेटी कायदे से पार करती है। 'वे दिन','लालटीन की छत' और 'एक चिथड़ा सुख' आदि अपन्यासों में भी ये लक्षण दिखाई देते हैं।

निर्मल वर्मा ने प्रेम की नई संवेदना को चित्रित कर नैतिकता की जड़ें हिला दीं। उनके कथा साहित्य में दांपत्य जीवन से अलग स्त्री-पुरूष के प्रेम के बदलते हुए स्वरूप उभरकर आते हैं। निर्मल वर्मा की कई कहानियों में स्वतंत्रता की चेतना से उपजे नैतिक द्वंद्व भी दिखाई पड़ते हैं। 'दो घर', 'वीकएण्ड', 'आदमी और लड़की', 'माया दर्पण' और 'बावली' जैसी कहानियों में यह नैतिक द्वंद्व नज़र आता है।

आधुनिक प्रेम की बेबसी, थकान, होमसिकनेस, आत्मरति और निष्क्रियता की भावनाओं को निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में देखा जा सकता है। अपने प्रेम के नए और परिवर्तित स्वरूप निर्मल वर्मा की कहानी 'छुट्टियों के बाद', 'अमालिया', 'दो घर', 'एक दिन का मेहमान', 'लवर्स', 'वीकएण्ड' में दृष्टिगत होते हैं। 'अंतर' तथा 'लवर्स' कहानी में प्रेम की निष्फल स्थिति के साथ-साथ प्रेम संबंधों में आए हुए अंतर को स्पष्ट किया गया है।

निर्मल वर्मा की कई कहानियों और उपन्यासों में प्रायः पाश्चात्य संस्कृति एवं विदेशी जीवन का चित्रण करते हुए यौन प्रवृत्तियों को प्रमुखता दी गयी है। इसका उदाहरण 'जलती झाड़ी','पिछली गर्मियों में', 'अमालिया', 'वीकएण्ड', 'इतनी बड़ी आकांक्षा', 'लंदन की एक रात' आदि कहानियों में देखने को मिलता है। 'वे दिन' उपन्यास में रायना अपने अकेलेपन को भरने के लिए किसी के साथ रात गुजार सकती है। यौन प्रवृत्तियाँ 'लाल टीन की छत' और 'रात का रिपोर्टर' उपन्यासों में भी द्रष्टव्य है। निर्मल वर्मा की 'जलती झाड़ी','लंदन की एक रात', 'वीकएण्ड' आदि कहानियों में यौन के नग्न चित्रण मिल जाते हैं।

आधुनिकता से उत्पन्न मूल्य संघर्ष ने संयुक्त परिवारों में बिखराव के साथ-साथ सामाजिक-पारिवारिक संबंधों के परंपरागत रूप को धूमिल कर दिया। पारिवारिक संबंधों में आए बदलाव, उदासीनता, ठण्डापन, बेचैनी, ऊब और घुटन का वातावरण 'कव्वे और काला पानी', कुत्ते की मौत, 'एक दिन का मेहमान', 'धागे' आदि कहानियों में निर्मल वर्मा ने अभिव्यक्त करने का सफल प्रयास किया है। निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में स्त्री-पुरुष या पति-पत्नी, पिता-पुत्री के पारस्परिक रिश्तों में तनाव तथा विघटन का बहुत ही सूक्ष्मता के साथ परीक्षण किया गया है। उलझते हुए संबंध अपनी अधिकतर जटिलता के साथ निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में उजागर हुए हैं।

'वे दिन', 'रात का रिपोर्टर','लालटीन की छत' आदि उपन्यासों में पारिवारिक जीवन की निष्फलता एवं व्यक्ति की विवशता का चित्रण किया गया है। 'माया दर्पण', 'एक दिन का मेहमान', 'बीच बहस में' आदि कहानियों में परम्परागत आस्था, उलझते हुए संबंधों एवं नैतिक मूल्यों के विघटन के फलस्वरूप दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन का ह्रास दृष्टिगोचर होता है। निर्मल वर्मा की कहानियाँ 'दहलीज', 'अंतर', 'लंदन की एक रात', 'धागे' आदि में आधुनिक नर-नारी के संबंधों के रागात्मक बदलावों पर निगाह केंद्रित है।

शहरी जीवन की कृत्रिमता और नगरीय, महानगरीय परिवेश में होने वाली विसंगतियों का चित्रण निर्मल वर्मा के संपूर्ण कथा साहित्य में सजीव रूप से हुआ है। महानगरीय जीवन में फैले भयावह खोखलेपन, तनाव, संत्रास, घुटन, मूल्यहीनता, परायेपन, अजनबीपन, व्यर्थता-बोध, बेरोज़गारी आदि पहलुओं का चित्रण निर्मल वर्मा ने अपने कथा साहित्य में बड़ी साफगोई से किया है। निर्मल वर्मा हिन्दी के पहले कथाकार हैं जिनकी कहानियों में लड़कियों ने पहली बार घर परिवार की दहलीज लाँघकर बाहर कॉफीहाउस में कदम रखा था।

'पिक्चर पोस्टकार्ड', 'कुत्ते की मौत', 'माया का मर्म' 'लंदन की एक रात', 'सितंबर की शाम', 'अमालिया', 'इतनी बड़ी आकांक्षा' आदि कहानियों में देखा जा सकता है कि बेकारी महानगरीय जीवन की एक समस्या है। उनके उपन्यासों में 'एक चिथड़ा सुख'और 'वे दिन' में महानगरों का शोर-

शराबा एवं भीड़ का वातावरण, क्लबों होटलों और रेस्तोराँ में उन्मुक्त प्रेम, मुक्त यौन-पिपासा, शराब-पिपासा आदि का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है। इन उपन्यासों और कहानियों के पात्र बेकारी के यथार्थ बोध एवं खालीपन से घिरे हुए हैं जो आधुनिकता बोध की उपज है।

अस्तित्ववाद आधुनिक जीवन की जटिल यांत्रिक सभ्यता के बोझ और तनावों से उत्पन्न जीवन दर्शन है। निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में अलगाव बोध, संत्रास, डर, मृत्युबोध, निरर्थकता, घुटन, चीख और भय, अर्थहीनता, यथार्थबोध जैसे अस्तित्ववादी घटकों की अभिव्यक्ति हुई है। घोर आत्मपरकता, कुण्ठा, निराशा और घुटन को शराब से शांत करने की पूरी ललक उनके कथा-साहित्य में लगातार दिखाई देती है। 'वे दिन' उपन्यास और 'परिंदे', 'जलती झाड़ी' और 'पिछली गर्मियों में' की अधिकांश कहानियाँ जीवन से पलायन और आत्मपरकता, शून्यता, एकाकीपन, घुटन, कुंठा, निराशा आदि अस्तित्ववादी अनुभूतियों की पहचान कराती है।

'जलती झाड़ी', 'माया का मर्म', 'सितंबर की एक शाम', 'लंदन की एक रात' आदि कहानियों में व्यर्थता बोध का उद्‌घाटन हुआ है। संत्रास अस्तित्ववादी विचारधारा की देन है। 'माया दर्पण', 'अंतर' और 'धागे' में यह संत्रास संबंधों के स्तर का है। 'डेढ़ इंच ऊपर' कहानी और 'वे दिन' उपन्यास में यह संत्रास युद्ध की देन है। 'खोज', 'कुत्ते की मौत', 'डेढ़ इंच ऊपर' में यह संत्रास मृत्यु बोध की देन है। 'कुत्ते की मौत' में मौत की पीड़ा का संत्रास

गहराई में पैठकर चित्रित किया गया है। 'रात का रिपोर्टर' उपन्यास में आपातकाल के 'टोटल टेरर' व्यक्त हुए हैं।

अस्तित्व संकट की समस्या आधुनिक युग के व्यक्ति की सबसे बड़ी समस्या है। निर्मल वर्मा ने अपने कथा-साहित्य में व्यक्ति स्वातंत्र्य की खूब वकालत की है। इनके पात्रों में अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष की वेचैनी दिखाई देती हैं। उदाहरण के तौर पर उनकी कहानियाँ 'अंतर', 'लंदन की एक रात' और 'वे दिन', 'एक चिथड़ा सुख' उपन्यासों के माध्यम से अस्तित्व के संकट की समस्या विविध रूपों में दिखायी गयी हैं। निर्मल वर्मा की नायिकाएँ पुरुष के आधिपत्य से मुक्त एवं स्वतंत्र हैं। 'पिक्चर पोस्टकार्ड', 'उनके कमरे', 'लंदन की एक रात', 'वीकएण्ड' आदि कहानियों और 'वे दिन', 'एक चिथड़ा सुख' आदि उपन्यासों में व्यक्ति स्वातंत्र्य को उत्तेजित किया गया है।

निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में मृत्युबोध की गहरी छाया है। अधिकतर यह महायुद्ध का परिणाम है। जीवन और मृत्यु के बीच की स्थिति पर सोचने की शुरूआत निर्मल वर्मा ने किया है। 'लाल टीन की छत' और 'वे दिन' उपन्यास में अरक्षा और मृत्यु का बोध गहराने लगता है जो आधुनिकता के बोध का परिणाम है। 'अंतिम अरण्य' उपन्यास में निर्मल वर्मा ने जीवन को मृत्यु के माध्यम से पहचानने की कोशिश की हैं। 'डायरी का खेल','कुत्ते की मौत','बीच बहस में' आदि कहानियों में निर्मल वर्मा ने मृत्यु बोध को दर्शाया है। यहाँ पर आधुनिकता बोध की दृष्टि से मृत्यु चेतना का परिचय मिलता है।

निर्मल वर्मा की रचनाएँ स्वातंत्र्योत्तर भारत की बदलती ज़िंदगी के दस्तावेज़ हैं। निर्मल वर्मा ने वर्तमान परिवेश के जीवन का ज्वलंत चित्रण अपने कथा साहित्य में प्रस्तुत करके परंपरागत कथा लेखन शैली का उल्लंघन किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से सम-सामयिक जीवन के कटु एवं निजी यथार्थ को उभारने की कोशिश की है। निर्मल वर्मा ने युगीन यथार्थ को प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति द्वारा नई कहानी के आन्दोलन को तीव्रता प्रदान की है।

आधुनिकता बोध के संदर्भ में निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में हम दृष्टि डालते हैं तो यह निश्चय ही मानना पड़ेगा कि निर्मल वर्मा भारतीय परंपरा को आत्मसात करनेवाले और उसे अभिव्यक्ति देनेवाले कथाकार हैं। आधुनिकता बोध का स्वर उनके कथा साहित्य में अधिक सशक्त ढंग से मुखरित हुआ है। हिन्दी में विश्वव्यापी ख्याति जितनी निर्मल वर्मा को मिली, उतनी किसी अन्य लेखक को नहीं। आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य के विकास में जिन प्रमुख रचनाकारों का योगदान रहा है, उनमें निर्मल वर्मा अग्रणी है।

निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में यंत्रीकरण, महायुद्धों, अस्तित्ववादी चितंन, नैतिक मूल्यों का विघटन आदि के फलस्वरूप उत्पन्न आधुनिक स्थितियों को उजागर किया गया है जो आधुनिकता बोध का परिचायक है। उनके कथा-साहित्य में आधुनिक जीवन की तीव्र अनुभूतियों और संवेदनाओं का परिचय मिलता है।

निश्चय ही निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में जो जीवन दर्शन अभिव्यक्त हुआ है वह वर्तमान सदर्भ में भी प्रासंगिक लगता है। अतः निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य को वर्तमान युग की स्पंदनमयी ज़िन्दगी के सप्राण पन्ने कहना सार्थक एवं समीचीन है।